RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

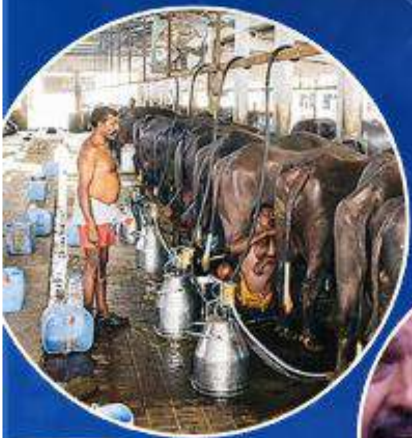

DATE
अक्टूबर
02
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

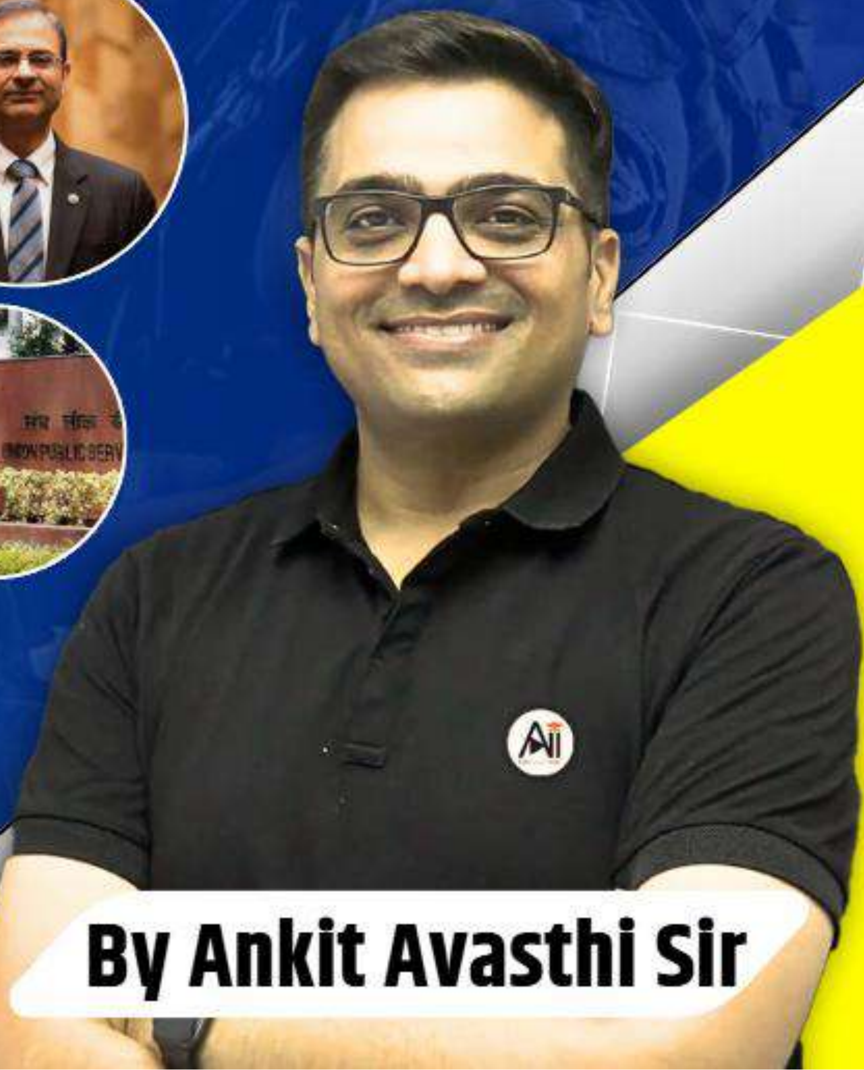

By Ankit Avasthi Sir

भारत का डेयरी सेक्टर / India's dairy sector

संदर्भ:

पिछले एक दशक में भारत में दूध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो 146 मिलियन टन से बढ़कर 239 मिलियन टन से अधिक हो गया है यानी 63% से ज्यादा की बढ़ोतरी। भारत लगातार विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बना हुआ है और अब यह वैश्विक दूध आपूर्ति में लगभग एक-चौथाई योगदान देता है, जिससे वैश्विक डेयरी उत्पादन में इसकी अहम भूमिका और मजबूत हुई है।

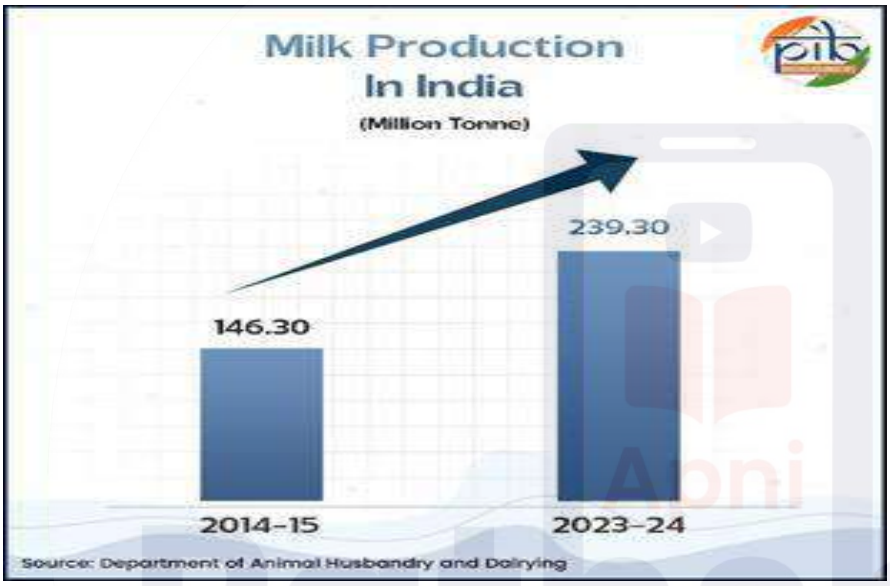

भारत का डेयरी सेक्टर: महत्व और विकास:

परिचय

- भारत का डेयरी सेक्टर देश की **अर्थव्यवस्था, ग्रामीण आजीविका और पोषण सुरक्षा** का आधार है।
- **ऑपरेशन फ्लड (श्वेत क्रांति)** के कारण भारत दूध-अभावी देश से बदलकर **दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक** बना।
- हालाँकि, इस क्षेत्र को **उत्पादकता, अवसंरचना और स्थिरता** जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिसके लिए **व्हाइट रेवोल्यूशन 2.0** जैसी पहल जरूरी हैं।

विकास और महत्व (Growth and Significance)

1. **सबसे बड़ा दूध उत्पादक (Largest Milk Producer):** भारत दुनिया के कुल दूध उत्पादन का **23–24%** हिस्सा रखता है।
2. **आर्थिक योगदान (Economic Contribution):**
    - डेयरी क्षेत्र भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था (GDP) में लगभग **5%** योगदान देता है।
    - यह करोड़ों ग्रामीण परिवारों, विशेषकर **सीमांत और छोटे किसानों** के लिए स्थिर आय का स्रोत है।
3. **रोज़गार सृजन (Employment Generation):**
    - डेयरी क्षेत्र में **8 करोड़ से अधिक किसान** काम करते हैं।
    - इनमें से लगभग **70% महिलाएँ** हैं, जिससे ग्रामीण महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है।
4. **पोषण सुरक्षा (Nutritional Security):**
    - दूध **प्रोटीन और कैल्शियम** का प्रमुख स्रोत है।
    - यह भारत की विशाल जनसंख्या की **कुपोषण की समस्या** दूर करने और आहार संबंधी ज़रूरतें पूरी करने में अहम है।
5. **सामाजिक–आर्थिक उत्थान:**
    - फसल असफल होने पर भी डेयरी खेती किसानों को **स्थायी आय** का साधन देती है।
    - सहकारी मॉडल (Cooperative Model) ने ग्रामीण महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके उन्हें **आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण** प्रदान किया है।

भारत में डेयरी क्षेत्र की प्रमुख पहलें

- **ऑपरेशन फ्लड (1970):** श्वेत क्रांति की शुरुआत, NDDB व डॉ. वर्गीज कुरियन के नेतृत्व में सहकारी मॉडल (अमूल उदाहरण)।
- **राष्ट्रीय गोकुल मिशन (2014):** देशी नस्लों का संरक्षण, उच्च गुणवत्ता वाले सांड, सेक्स-सॉर्टेड सीमेन, "गोकुल ग्राम" की स्थापना।
- **राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम:** दूध की गुणवत्ता, संग्रहण, प्रोसेसिंग और विपणन का ढांचा मजबूत करना।
- **डेयरी एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट स्कीम:** नाबार्ड द्वारा डेयरी क्षेत्र में स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता।
- **डेयरी प्रोसेसिंग एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (DIDF):** डेयरी प्रोसेसिंग का आधुनिकीकरण, सब्सिडाइज्ड लोन।
- **व्हाइट रिवोल्यूशन 2.0:** महिलाओं का सशक्तिकरण, दूध उत्पादकता वृद्धि, इंफ्रास्ट्रक्चर सुदृढ़ीकरण और निर्यात प्रोत्साहन।

डेजर्ट सॉयलिफिकेशन टेक्नोलॉजी / Desert Soilification Technology

संदर्भ:

पहली बार राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय (CUoR) के शोधकर्ताओं ने पश्चिमी राजस्थान की शुष्क भूमि में गेहूं की सफल खेती की है। यह उपलब्धि **डेजर्ट सॉयलिफिकेशन टेक्नोलॉजी** के प्रयोग से संभव हुई है, जो सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

डेजर्ट सॉयलिफिकेशन टेक्नोलॉजी (Desert Soilification Technology):

परिचय (Overview):

- यह एक उन्नत जैव-प्रौद्योगिकी विधि है, जो बंजर रेगिस्तानी रेत को मृदा जैसी सामग्री में बदल देती है।
- इसका उद्देश्य रेगिस्तानीकरण पर रोक, शुष्क क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता बढ़ाना और सतत भूमि उपयोग सुनिश्चित करना है।

तकनीक (Technology)

- इसमें बायोफॉर्म्युलेशन और पॉलिमर का प्रयोग किया जाता है, जो ढीली रेत को बाँधकर मिट्टी जैसी संरचना प्रदान करते हैं।
- इससे रेत की बनावट सुधरती है और उसमें जल धारण क्षमता (Water Retention) आती है।

कार्यप्रणाली (How Does It Work?)

1. **पॉलिमर-आधारित बायोफॉर्म्युलेशन:** प्राकृतिक पॉलिमर और सूक्ष्मजीव (microbial) तैयारियाँ रेत पर डाली जाती हैं।
2. **रेत कणों का क्रॉस-लिंकिंग (Cross-Linking of Sand Particles):** बायोपॉलिमर रेत के कणों को जोड़कर एक संरचनात्मक नेटवर्क बनाते हैं, जिससे मिट्टी जैसी परत तैयार होती है।
3. **जल धारण क्षमता (Water Retention):** यह संरचना पानी को पकड़कर रखती है, जिससे सिंचाई की जरूरत कम हो जाती है और रेत से पानी का तेजी से रिसाव (percolation) रुकता है।
4. **सूक्ष्मजीवी सहयोग (Microbial Boost):** लाभकारी सूक्ष्मजीव पौधों की वृद्धि बढ़ाते हैं, मिट्टी की उर्वरता सुधारते हैं और फसलों की तनाव सहन क्षमता (stress resistance) बढ़ाते हैं।
5. **मिट्टी जैसी विशेषताएँ (Soil-like Properties):** संशोधित रेत में पोषक तत्व धारण क्षमता, सूक्ष्मजीवों का विकास और सतत फसल उत्पादन संभव हो जाता है।

रेगिस्तानी मिट्टीकरण तकनीक की प्रमुख विशेषताएँ:

- **रेत से मिट्टी में बदलाव** – बायो-पॉलीमर की मदद से ढीली रेत को आपस में जोड़कर मिट्टी जैसी संरचना बनाई जाती है, जिसमें जड़ों को पकड़ने और हवा के लिए जगह होती है।
- **जल धारण क्षमता** – यह तकनीक रेत में नमी बनाए रखती है और सिंचाई की ज़रूरत को लगभग **30–40% तक कम करती है**।
- **सूक्ष्मजीवों की बढ़ोतरी** – विशेष बायो-फॉर्मुलेशन लाभकारी सूक्ष्मजीवों को सक्रिय करता है, जिससे पोषक तत्वों का चक्र सुधरता है और फसलों की सहनशीलता बढ़ती है।
- **फसलों में उपयोग** – इसे गेहूँ, बाजरा, ग्वारगम और चने पर सफलतापूर्वक आज़माया गया है। अब इसे **मिलेट्स और मूंग** पर भी लागू किया जा रहा है।
- **कम लागत वाली खेती** – सिंचाई के चक्र घटकर (गेहूँ में सामान्यत: 5–6 बार की जगह 3–4 बार) खेती सस्ती और आसान हो जाती है।
- **जलवायु अनुकूलता** – यह तकनीक पानी की कमी और मरुस्थलीकरण वाले क्षेत्रों में टिकाऊ खाद्य उत्पादन का साधन देती है।

महत्व:

- **कृषि उत्पादकता:** बंजर रेगिस्तान को खेती योग्य भूमि में बदलकर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित।
- **जल दक्षता:** कम सिंचाई (3–4 चक्र) में उच्च उत्पादन, शुष्क क्षेत्रों के लिए अहम।
- **सस्टेनेबिलिटी:** मरुस्थलीकरण रोकने और बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने का जैव-प्रौद्योगिकीय समाधान।
- **स्केलेबिलिटी:** बाजरा, मूंग जैसी फसलों पर भी लागू करने की संभावना।
- **सामाजिक प्रभाव:** खाद्य सुरक्षा व सतत कृषि के लिए विज्ञान का व्यावहारिक समाधान।

ट्रम्प की गाज़ा शांति योजना / Trump's Gaza peace plan

संदर्भ:

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ मिलकर **गाज़ा संघर्ष समाप्त करने की व्यापक योजना** पेश की। यह 20 बिंदुओं वाला प्रस्ताव लंबे समय से चले आ रहे तनाव को दूर करने और क्षेत्र में शांति स्थापित करने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।

ट्रम्प की गाज़ा शांति योजना – मुख्य बिंदु:

- **हमास निरस्त्रीकरण (Disarmament)** – हमास को अपने हथियार छोड़ने होंगे। जो सदस्य शांति को स्वीकार करेंगे उन्हें माफी (Amnesty) और सुरक्षित रास्ता (जॉर्डन, मिस्र, क़तर) दिया जाएगा।
- **कोई जबरन विस्थापन नहीं** – फिलिस्तीनियों को गाज़ा से नहीं निकाला जाएगा। इज़राइल ने वादा किया कि वह इस क्षेत्र को न तो कब्ज़ा करेगा और न ही मिलाएगा।
- **सुरक्षा तंत्र:** – एक अंतरराष्ट्रीय स्थिरीकरण बल (ISF) (अमेरिका, अरब और वैश्विक साझेदार):
    - फिलिस्तीनी पुलिस को प्रशिक्षित करेगा
    - गाज़ा की सीमाओं की सुरक्षा करेगा
    - सहायता और हथियारों की आपूर्ति को नियंत्रित करेगा
- **इज़राइली वापसी:** इज़राइल धीरे-धीरे गाज़ा को ISF के हवाले करेगा, सिर्फ अस्थायी सुरक्षा घेरा तब तक रखेगा जब तक खतरे पूरी तरह समाप्त न हो जाएँ।
- **अंतरिम शासन:** गाज़ा का संचालन एक तकनीकी फिलिस्तीनी समिति (स्थानीय + अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ) करेगी, जिस पर एक **"बोर्ड ऑफ पीस"** नज़र रखेगा। इसकी अध्यक्षता ट्रम्प करेंगे और पूर्व ब्रिटिश पीएम टोनी ब्लेयर भी शामिल होंगे।
- **मानवीय सहायता:**– संयुक्त राष्ट्र और रेड क्रेसेंट की देखरेख में अस्पतालों, बेकरी, ढांचा निर्माण और मलबा हटाने के लिए सहायता दी जाएगी।
- **कैदियों और बंधकों की अदला-बदली (Prisoner & Hostage Swap)** – समझौते के 72 घंटे के भीतर:
    - हमास बंधकों को छोड़ेगा
    - इज़राइल **250 उम्रकैद कैदियों** और **1700 बंदियों** (महिलाएँ और बच्चे शामिल) को रिहा करेगा।
- **क्षेत्रीय गारंटी:** – अरब और मुस्लिम देश यह सुनिश्चित करेंगे कि हमास समझौते का पालन करे और दोबारा खतरा न बने।
- **अंतरराष्ट्रीय समर्थन:** योजना को **8 देशों** का समर्थन: क़तर, जॉर्डन, यूएई, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, तुर्की, सऊदी अरब और मिस्र।

ट्रम्प की गाज़ा शांति योजना – प्रमुख चुनौतियाँ:

- **हमास की भूमिका** – क्या हमास वास्तव में सत्ता और हथियार छोड़कर समझौते को मान लेगा, यह सबसे बड़ी चुनौती है।
- **इज़राइली राजनीति** – प्रधानमंत्री नेतन्याहू को अपनी कट्टर-दक्षिणपंथी सहयोगी पार्टियों को इस योजना के लिए मनाना कठिन होगा।
- **विदेशी नियंत्रण :**गाज़ा का संचालन सीधे एक बाहरी अंतरराष्ट्रीय समिति को सौंपा जाएगा, जिससे पैलेस्टिनियन अथॉरिटी को दरकिनार कर दिया गया है।
- **ट्रम्प की प्रतिबद्धता** – ट्रम्प द्वारा गाज़ा पुनर्निर्माण की अध्यक्षता लंबी अमेरिकी भूमिका का संकेत देती है, लेकिन व्यावसायिक नजरिया यह संदेह पैदा करता है कि क्या वे वास्तव में राजनीतिक रूप से लगातार प्रतिबद्ध रहेंगे।
- **योजना की कमियाँ:** दस्तावेज़ में समयसीमा, नक्शे और ठोस कार्यान्वयन व्यवस्था की स्पष्ट जानकारी नहीं है।
- **वेस्ट बैंक का बहिष्कार:** योजना में वेस्ट बैंक की बस्तियों, कब्ज़ों और हिंसा का कोई उल्लेख नहीं है, जबकि यह मूल राजनीतिक मुद्दा है।
- **क्षेत्रीय जटिलताएँ:** अरब देशों की भूमिका अस्पष्ट और सीमित है, ईरान को पूरी तरह बाहर रखा गया है।

भारत के लिए निहितार्थ:

सकारात्मक पहलू:

- वेस्ट एशिया में शांति स्थापित होने से भारत के 90 लाख प्रवासियों की सुरक्षा और 80% तेल आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी।
- भारत की रणनीतिक परियोजनाओं, जैसे इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप कॉरिडोर को मजबूती मिलेगी।

सावधानियां:

- पाकिस्तान की भागीदारी और योजना के समर्थन से भारत के लिए नई चुनौती उत्पन्न हो सकती है।
- भारत को इज़राइल, अरब देशों और ईरान के साथ अपने रिश्तों में संतुलन बनाए रखना होगा, खासकर बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों के बीच।

रेपो दर 5.50% पर अपरिवर्तित / Repo rate unchanged at 5.50%

संदर्भ:

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने बुधवार को दूसरी लगातार समीक्षा में **बेंचमार्क रेपो रेट को 5.5 प्रतिशत** पर अपरिवर्तित रखा। यह निर्णय आर्थिक वृद्धि की संभावनाओं और टैरिफ-संबंधी जोखिमों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए लिया गया है।

आरबीआई की चौथी द्वैमासिक नीति – FY 2025-26

- **रेपो रेट (Repo Rate):** 5.5% पर यथावत, कोई बदलाव नहीं।
- **स्टांस (Stance):** Neutral (तटस्थ)।
- **मुद्रास्फीति अनुमान (Inflation Forecast):** FY26 के लिए घटाकर **2.6%** किया गया (पहले 3.1%)।
- **विकास दर अनुमान (Growth Forecast):** FY26 के लिए बढ़ाकर **6.8%** किया गया (पहले 6.5%)।

तिमाहीवार विकास दर अनुमान:

- Q2 FY26 – 7% (पहले 6.7%)
- Q3 FY26 – 6.4% (पहले 6.6%)
- Q4 FY26 – 6.2% (पहले 6.3%)

पृष्ठभूमि:

- फरवरी 2025 से अब तक **100 बेसिस पॉइंट की दर कटौती** की गई है।
- अगस्त में मुद्रास्फीति **6 साल के निचले स्तर 2.07%** पर आ गई, जिसका कारण था – खाद्य कीमतों में नरमी और GST में कटौती।

RBI नीति का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

- **विकास के लिए सकारात्मक संकेत (Pro-growth Signal):**
  - नीति यह दर्शाती है कि वैश्विक अस्थिरता के बावजूद भारत में **विकासोन्मुख वातावरण** है।
  - मुद्रास्फीति 4% के लक्ष्य से नीचे रहने की उम्मीद के कारण **आर्थिक परिदृश्य मजबूत** दिख रहा है।
- **मजबूत विकास की संभावनाएँ (Stronger Growth Prospects):**
  - GDP विकास दर अनुमान 6.8% तक बढ़ाकर RBI ने **घरेलू मांग में सुधार** पर भरोसा जताया है।
  - कम मुद्रास्फीति से **उपभोक्ता खर्च बढ़ने और क्रय शक्ति मजबूत होने** की उम्मीद है।
- **नीति की पूर्वानुमेयता:** Neutral स्टांस रखने से **व्यापार और निवेशकों को स्पष्टता** मिली है, जिससे दीर्घकालीन निवेश योजनाएँ बनाना आसान हुआ।

टैरिफ और निर्यात जोखिम (Tariff Risks):

- निर्यात-आधारित क्षेत्र **आपूर्ति श्रृंखलाओं में अस्थिरता और लागत वृद्धि** के कारण दबाव में रह सकते हैं।
- यह H2 FY26 में विकास गति को प्रभावित कर सकता है।

रेपो रेट क्या है?

- रेपो रेट वह **ब्याज दर** है जिस पर **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)** वाणिज्यिक बैंकों को धन उधार देता है।
- बैंकों को इसके बदले में **सरकारी प्रतिभूतियाँ** जमा करनी होती हैं और तय मूल्य पर उन्हें पुन: खरीदने का वचन देना होता है।

मुख्य प्रभाव (Key Impacts):

1. **मुद्रास्फीति नियंत्रण (Inflation Control):**
   - रेपो रेट बढ़ाने से **उधार महंगा** हो जाता है, जिससे **मुद्रा आपूर्ति कम** होती है और कीमतों की बढ़त नियंत्रित होती है।
   - रेपो रेट घटाने से **उधार सस्ता** हो जाता है, जिससे खर्च और निवेश बढ़ता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।
2. **उधार लागत (Borrowing Costs):**
   - रेपो रेट बदलने से **बैंकों द्वारा ग्राहकों को दिए जाने वाले ऋणों की ब्याज दरें** प्रभावित होती हैं, जैसे होम लोन, पर्सनल लोन, कार लोन।
   - उच्च रेपो रेट → EMI बढ़ती है; कम रेपो रेट → EMI घटती है।
3. **तरलता प्रबंधन (Liquidity Management):**
   - RBI बैंकिंग सिस्टम में **पैसे के प्रवाह को नियंत्रित** करने के लिए रेपो रेट का उपयोग करता है।
   - इसे बढ़ाकर उधार महंगा किया जाता है या घटाकर सस्ता किया जाता है।

संघ लोक सेवा आयोग / Union Public Service Commission

संदर्भ:

1 अक्टूबर को **संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)** अपनी स्थापना की शताब्दी मनाया। यह मील का पत्थर भारतीय सिविल सेवा प्रणाली और सार्वजनिक प्रशासन में UPSC की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) क्या है?

- UPSC भारत की केंद्रीय भर्ती एजेंसी है, जो ऑल इंडिया सर्विसेज (IAS, IPS, IFS) और Group A और Group B पदों के लिए भर्ती करती है।
- यह एक संविधानिक स्वतंत्र निकाय है, जो पारदर्शी और मेरिट आधारित चयन प्रक्रिया सुनिश्चित करता है।

संविधानिक स्थिति और इतिहास:

- **संविधानिक प्रावधान:** Articles 315-323 (Part XIV) के तहत UPSC का गठन, जिसमें इसकी संरचना, कार्य और सदस्यों की सेवा शर्तें निर्धारित हैं।
- **ऐतिहासिक उद्गम:** ब्रिटिश शासन में पहला पब्लिक सर्विस कमीशन 1 अक्टूबर 1926 को Lee Commission की सिफ़ारिश पर स्थापित हुआ। स्वतंत्रता के बाद इसे **संवैधानिक दर्जा** मिला और 26 जनवरी 1950 को इसे **UPSC** नाम दिया गया।
- **मुख्यालय:** Dholpur House, नई दिल्ली।

संरचना और नियुक्ति:

- UPSC में एक अध्यक्ष और 9-11 सदस्य होते हैं, जिन्हें भारत के राष्ट्रपति नियुक्त करते हैं।
- सदस्यों का कम से कम आधा 10 साल के सरकारी सेवा अनुभव वाला होना चाहिए।
- **सेवा अवधि:** 6 साल या 65 वर्ष की आयु तक।
- सदस्य या अध्यक्ष को सुप्रीम कोर्ट जांच के बाद ही हटाया जा सकता है।

UPSC के कार्य (Article 320 के अनुसार):

1. **परीक्षा संचालन** – ऑल इंडिया और सेंट्रल सर्विसेज के लिए।
2. **सीधा भर्ती** – साक्षात्कार के माध्यम से।
3. **प्रमोशन और ड्यूटेशन** – प्रबंधन और सलाह देना।
4. **भर्ती नियमों का निर्माण** – सहायता करना।
5. **अनुशासन और अन्य मामले** – राष्ट्रपति द्वारा रेफर किए गए मामलों में परामर्श।
6. **संयुक्त भर्ती में राज्य सहायता** – यदि अनुरोध किया जाए।
7. **वार्षिक रिपोर्ट** – राष्ट्रपति और संसद को प्रस्तुत करना।

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) का विकास:

ब्रिटिश औपनिवेशिक जड़ें:

- **प्रारंभिक इंडियनाइजेशन (1858 के बाद):** ईस्ट इंडिया कंपनी के अंत के बाद सिविल सेवा नियुक्तियां प्रतियोगी परीक्षाओं के आधार पर होने लगीं। लेकिन ये परीक्षाएं लंदन में आयोजित होती थीं, जिससे भारतीयों की भागीदारी सीमित थी। 1863 में **सत्येंद्रनाथ टैगोर** ICS में सफल हुए और ब्रिटिश एकाधिकार तोड़ा।
- **ली कमीशन (1924):** रॉयल कमीशन ऑन द सुपरियर सिविल सर्विसेज ने भारत में प्रशासन में नस्लीय संरचना सुधारने के लिए सिफारिशें दीं और सार्वजनिक सेवा आयोग स्थापित करने की सलाह दी।
- **पहला पब्लिक सर्विस कमीशन (1926):** ली कमीशन की सिफारिशों के आधार पर पहला आयोग 1 अक्टूबर 1926 को स्थापित हुआ, अध्यक्ष **सर रॉस बार्कर** थे।
- **फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन (1935):** भारत सरकार अधिनियम, 1935 ने इसे संघीय आयोग में बदल दिया और प्रांतीय आयोगों का निर्माण सुनिश्चित किया

स्वतंत्र भारत में विकास:

- **संवर्धन काल (1950–1970):** स्वतंत्रता के बाद UPSC ने सक्षम प्रशासकों की भर्ती पर ध्यान केंद्रित किया, जो भूमि सुधार और विकास कार्यक्रमों को लागू कर सकें।
- **क्षेत्र का विस्तार (1970–1990):** गरीबी उन्मूलन और औद्योगिकीकरण के बढ़ते प्रयासों के चलते UPSC ने विविध शैक्षणिक पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को शामिल करना शुरू।
- **आर्थिक सुधार (1990–2010):** उदारीकरण और वैश्वीकरण ने तकनीकी और नियामक दक्षता वाले अधिकारियों की मांग बढ़ाई। UPSC ने परीक्षाओं में पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और प्रशासन जैसे विषय जोड़े।
- **डिजिटल युग और शासन (2010–वर्तमान):** ई-गवर्नेंस और डेटा-आधारित नीतियों के लिए तकनीकी और सार्वजनिक-निजी साझेदारी में कुशल अधिकारियों की जरूरत बढ़ी। UPSC ने सिविल सर्विसेज एटिट्यूड टेस्ट (CSAT) और नैतिकता, ईमानदारी, और योग्यता पेपर जैसी सुधारित रूपरेखाएं पेश की।

मोंडियाकल्ट 2025 / MONDIACULT 2025

संदर्भ:

हाल ही में भारत का प्रतिनिधित्व **केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत** ने **एशिया-प्रशांत समूह के अध्यक्ष** के रूप में किया। उन्होंने **MONDIACULT 2025** में संस्कृति को एक वैश्विक सार्वजनिक संपत्ति (global public good) के रूप में महत्व देने पर जोर दिया।

MONDIACULT 2025 क्या है?

- यह दुनिया की सबसे बड़ी सांस्कृतिक नीति सम्मेलन है, जिसमें मंत्री, सांस्कृतिक नेता, नागरिक समाज और युवा शामिल होकर वैश्विक सांस्कृतिक एजेंडा तय करते हैं।
- **आयोजक एवं स्थल:** UNESCO द्वारा आयोजित, और **स्पेन**, बार्सिलोना में आयोजित।
- **उद्देश्य:** संस्कृति को 2030 के बाद के UN विकास एजेंडा में एक स्वतंत्र लक्ष्य के रूप में स्थापित करना, और इसे सतत विकास का प्रेरक और एकता का साधन मानना।

प्राथमिक विषय (Priority Themes)

1. **सांस्कृतिक अधिकार:** सार्वभौमिक पहुँच और सुरक्षा सुनिश्चित करना।
2. **संस्कृति में डिजिटल तकनीक:** नवाचार के माध्यम से सांस्कृतिक विकास।
3. **संस्कृति और शिक्षा:** मूल्य और रचनात्मकता को बढ़ावा देना।
4. **सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था:** क्रिएटिव इंडस्ट्रीज को सशक्त बनाना।
5. **संस्कृति और जलवायु कार्रवाई:** धरोहर और सततता का संबंध।
6. **संस्कृति, विरासत और संकट:** संघर्ष और आपदाओं में संस्कृति की सुरक्षा।

फोकस क्षेत्र (Focus Areas)

- **शांति के लिए संस्कृति:** संवाद और सामंजस्य को बढ़ावा।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और संस्कृति (AI and Culture):** सांस्कृतिक क्षेत्रों में एथिकल AI का उपयोग।

भारत के लिए महत्व: भारत ने मंत्री स्तरीय बैठक में एशिया-प्रशांत समूह की अध्यक्षता की, जो उसकी सांस्कृतिक कूटनीति में नेतृत्व को दर्शाता है।

- भारत ने दोहराया कि **संस्कृति समावेशी और सतत विकास की आधारशिला** है।

वेनेज़ुएला / Venezuela

संदर्भ:

वेनेज़ुएला के राष्ट्रपति **निकोला मादुरो** ने हालिया अमेरिकी हमलों के बाद **राज्य आपातकाल** की घोषणा करने की तैयारी का संकेत दिया है। ये हमले संदिग्ध वेनेज़ुएला ड्रग नावों पर किए गए थे, जो दक्षिण कैरिबियन सागर में थे।

विवाद का विवरण:

1. **अमेरिकी सैन्य कार्रवाई (U.S. Military Strikes):**
   - सितंबर 2025 में अमेरिका ने कैरेबियन में हवाई हमले किए और **कम से कम तीन जहाजों को नष्ट** किया।
   - अमेरिकी दावे के अनुसार, ये जहाज **वेनेज़ुएला से अवैध ड्रग्स** ला रहे थे।
   - इन हमलों में **कम से कम 17 लोग मारे गए**।
   - राष्ट्रपति **डोनाल्ड ट्रंप** ने कहा कि यह कार्रवाई **अमेरिका में नारकोटिक्स के प्रवाह को रोकने के लिए आवश्यक** थी।
2. **वेनेज़ुएला की प्रतिक्रिया (Venezuelan Reaction):**
   - वेनेज़ुएला सरकार ने हमलों की **कड़ी निंदा** की और इसे "**अवैध हत्याएँ और युद्ध की कार्रवाई**" बताया।
   - राष्ट्रपति **मादुरो** ने देश की **मिलिशिया को सक्रिय** किया और अमेरिकी नौसैनिक तैनाती को "**खूनी खतरा**" बताया।
3. **राष्ट्रपति शक्तियों का विस्तार:**
   - 29 सितंबर 2025 को मादुरो ने **एक डिक्री पर हस्ताक्षर** किया, जिससे उन्हें:
     - सशस्त्र बलों को सक्रिय करने,
     - सार्वजनिक सेवाओं और तेल उद्योग पर नियंत्रण लेने,
     - और अमेरिकी हमले की स्थिति में सीमाएँ बंद करने की **व्यापक शक्तियाँ** मिलीं।
   - इसे उन्होंने "**हथियारबंद गणराज्य**" बनाने की योजना के रूप में पेश किया।
4. **अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया:**
   - कानूनी विशेषज्ञ और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने **अमेरिकी हमलों की अंतर्राष्ट्रीय कानूनी वैधता** पर सवाल उठाए।
   - कई अंतर्राष्ट्रीय नेताओं ने **बढ़ती तनाव की चिंता** जताई।

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
इतिहास
अर्थव्यवस्था
भूगोल
भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था
1500x4
₹6000/-
₹4500/-
रोज़ाना लाइव क्लासेस
साप्ताहिक टेस्ट
क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
लाइव डाउट सेशन
रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न
COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
COURSE FEE
~~₹4000/-~~
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
Baaten Bazar Ki
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

EMI AVAILABLE

+ (FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)

- Long-Term Investing Foundations
- Principles of Value Investing and Stock
- Portfolio Construction Mastery
- Sectoral Investing
- Stock Picking Framework
- Active Portfolio Management Techniques
- Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR